विषय सूची

पृष्ठ - संख्या

प्रथम अध्याय १-५१

हिन्दी कथा साहित्य में सामाजिक चेतना और दिशा परिवर्तन की समस्यायें भूमिका और विकास रेखाएँ

क - समाज, साहित्य और सामाजिक चेतना ३ - १०

1. समाज
2. साहित्य
3. सामाजिक चेतना

ख - सामाजिक चेतना के विविध आयाम १० - १७

1. राजनीतिक चेतना और समाज
2. आर्थिक चेतना और समाज
3. धार्मिक चेतना और समाज
4. साहित्य में समाजिक चेतना का प्रतिफलन

ग - हिन्दी कथा साहित्य में सामाजिक चेतना का आविर्भाव १७ - ३१

1. हिन्दी कहानी साहित्य और समाज
2. हिन्दी उपन्यास साहित्य और समाज

घ. हिन्दी कथा साहित्य महिला कथाकारों की रचनाओं में सामाजिक चेतना ३१ - ५१

1. स्वतंत्रता के पूर्ववर्ती महिला कहानीकारों का समाज

सुभद्राकुमारी चौहान

उषादेवी मित्रा

कमला चौधरी

श्रीमती चन्द्रकिरण सौनरक्सा

तेजरानी पाठक

तारा पांडे

2. स्वातंत्र्योत्तर महिला कहानीकारों का समाज
उषा प्रियंवदा
मन्नू भंडारी
कृष्णा सेबती
निरुपमा सेवती
मृदुला गर्ग
राजी सेठ
मेहरुन्निसा परवेज

द्वितीय अध्याय ५२ - १२४

मन्नू भंडारी एक परिचयात्मक दृष्टि

क. व्यक्तित्व की एक झाँकी ५३ - ६३
ख. कथाकार मन्नू भंडारी ६३ - ७१
ग. मन्नू भंडारी के उपन्यास एक विहंगम दृष्टि ७१ - ८३
1. एक इंच मुस्कान
2. आपका बंटी
3. महाभोज
4. स्वामी
घ. नाट्य रचनाएँ समान्य परिचय ८३ - ८५
1. बिना दीवारों का घर
2. महाभोज का नाट्य रूपांतर
ड. मन्नू भंडारी की कहानियाँ एक झलक ८६ - १२४
1. मैं हार गई
2. तीन निगाहों की एक तस्वीर
3. यही सच है
4. एक प्लेट सैलाब
5. त्रिशंकु

तृतीय अध्याय १२५-१२८

मन्नू भण्डारी के कथा साहित्य में समाज का
स्वरूप उपन्यासों का विवेचन और विश्लेषण

क. कथा साहित्य और समाज १२६ -१५०

1. मन्नू जी के उपन्यासों में चित्रित नारी के विविध रूप

1. परिवार के परिप्रेक्ष्य में नारी की स्थिति

2. आधुनिकता और पंरपरा के बीच पडी नारी की अवस्था

3. युगीन समस्याओं के सन्दर्भ में नारी का रूप

4. जीवन के रहस्यों की खोज में लीन नारी की स्थिति

5. नैतिकता और अनैतिकता के सन्दर्भ में नारी की स्थिति

6. स्वावलंबी तथा स्वतंत्र व्यक्तित्ववाली नारी

ख. मन्नू भण्डारी के उपन्यासों में अभिव्यक्त समाज १५० - १६६

1. पुरुष प्रधान समाज व्यवस्था

2. समाज का मूल अन्तर्विरोध

3. व्यक्तिनारी और समाज का संघर्ष

4. राजनैतिक आदर्शों की निरर्थकता

ग. मन्नू जी के उपन्यासों में चित्रित परिवार १६७ - १८२

1. संयुक्त परिवार का विघटन

2. आणविक परिवार की प्रधानता

3. स्त्री - पुरुष संबन्धों में द्वन्द्व

4. बच्चों की मानसिक स्थिति

घ. मन्नू जी के उपन्यासों के प्रमुख पुरुष पात्र १८२ - १९८

1. स्वतंत्र व्यक्तित्व चाहनेवाले पुरुष

2. रुढ़ि विरोधी विद्रोही पुरुष पात्र

3. स्वार्थी एवं सुविधा भोगी पुरुष

4. परिस्थितियों से जूझने की क्षमता न रखनेवाले विवश कथा पात्र

चौथा अध्याय १९९ - २८९

मन्नू भण्डारी के कथा साहित्य में समाज का स्वरूप

कहानियों का विश्लेषण और विवेचन

कहानी साहित्य और समाज

क. मन्नू भंडारी की कहानियों में अभिव्यक्त परिवार २०२-२४५

I. पारिवारिक संबन्धों की दृष्टि से नारी के विविध रूप

1. परिवारिक जिम्मेदारियों के प्रति संघर्षशील कामकाजी अविवाहिता नारी
2. विवाहपूर्व तनाव द्वन्द्व और शोषण की शिकार होनेवाली नारी
3. नारी का परंपरागत पत्नी रूप
4. विवाह के बाद पत्नी और प्रेमिका की भूमिका निभानेवाली
5. विवाहोपरान्त अन्य पुरुष की ओर आकार्षित होनेवाली नारी
6. नारी के ममतामयी मातृ रूप
7. विवश तथा उपेक्षित वृद्धा नारी

II. पारिवारिक विघटन की विभिन्न समस्यायें

1. संयुक्त परिवार का विघटन
2. दाम्त्य विघटन
3. नारी की आर्थिक स्वतंत्रता एवं पुरुष का अहं
4. आणविक परिवार और सदस्यों का संबन्ध
5. अर्थाभाव और धन की अधिकता
6. विवाहपूर्व प्रेम की निष्पत्ति परिवारिक विघटन

III. पारिवारिक समस्याओं का परिणाम

1. विवाह रहित जीवन को स्वीकारना
2. परंपरा का विरोध
3. क्षण का महत्व
4. काम अतृप्रि से प्रभावित कुंठित जीवन
5. अनिच्छित जीवन का संत्रास
6. अकेलेपन

ख. समाज २४५- २७२

1 नैतिक मूल्यों का ह्रास

1. स्त्री - पुरुष संबन्धों में दूरियाँ
2. परंपरा से अलग होने का परिणाम
3. समाज में टूटते मूल्यों का बोध
4. संस्कारों से आक्रांत नयी पीढ़ी की त्रासदी

II राजनैतिक आदर्शों का खोखलापन

1. आधुनिक नेताओं का चारित्रगत विचलन
2. पूंजीपतियों की हृदयहीनता
3. उच्चवर्ग का आंतक
4. बेकसूर का कसूर बनानेवाली कानून और सामाजिक व्यवस्थाएँ

III महानगरीय बोध

1. मानवीय संबन्धों में कृत्रिमता
2. अजनबीपन
3. आर्थिक तनाव
4. अनिश्चित जीवन परिवेश जन्य कुंठाएँ
5. स्वार्थप्रेरित छाल प्रवंचना का स्वरूप
6. व्यक्तिप्रधान जीवन बोध

ग. व्यक्ति २७२ - २८९

व्यक्ति की निजी समस्याएँ आधुनिक जीवन के सन्दर्भ में

1. समाज और परिवार के प्रतिनिधि नारी पात्र
2. परिश्रमी नारी
3. वृद्धा नारी
4. युवा नारी

II. मन्नू भंडारी की कहानियों के पुरुष पात्र

1. परंपरावादी पात्र
2. विद्रोही पात्र
3. स्वकेन्दित पात्र
4. सामाजिक पात्र

पंचम अध्याय २९० - ३४२

मन्नू भंडारी के कथा साहित्य में समाज
का स्वरूप एक समीक्षात्मक अध्ययन

क. समाजशास्त्रीय दृष्टि से कथा साहित्य का महत्व
एवं मन्नू भंडारी की रचनाएँ २९२ - ३०३

1. सामाजिक समस्याओं का चित्रण
2. व्यक्ति के अंह की विवृति
3. परिवार के सही अकन में आस्था

ख. सांस्कृतिक दृष्टि से कथा साहित्य का महत्व एवं
मन्नू भण्डारी की कृतियाँ ३०३ - ३१४

1. भारतीय संस्कृति पर पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव
को अभिव्यक्त करने में सक्षम रचनाएँ
2. भारतीमता के प्रति रुझान

ग. बदलते भारतीय परिवेश की दृष्टि से मन्नू भण्डारी की रचनाएँ ३१४ - ३२७

1. भारतीय समाज के बदलाव का जीवन्त चित्रण
2. भारतीय राजनीति में बदलाव की असलियत का चित्रण

घ. संवेदना की दृष्टि से मन्नू भण्डारी की रचनाएँ ३२७ - ३४२

1. मार्मिक रचनाएँ
2. व्यंग्यात्मक रचनाएँ
3. विवरणात्मक रचनाएँ

उपसंहार ३४३ - ३६४